CH. CHARAN SINGH COLLEGE OF EDUCATION & TECHNOLOGY

SADARPUR MEERUT

SESSION - 2023 - 2024

B.Ed- Ist year

24104587

5 August

NAME - Kirtika Chaudhary

CLASS - B'Ed Ist year

FILE NAME - Comparison between 2 Scholars

Roll No.- 240562000030

SUBMITTED TO
B.P. Singh

SUBMITTED BY -
Kirtika Chaudhary

CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY MEERUT

Scanned with OKEN Scanner

wave

TOPIC ______ DATE ______

S.No.	Topic	Sign.
1	महात्मा गांधी जीवन परिचय	[signature]
2	रवीन्द्रनाथ टैगोर जीवन परिचय	
3	महात्मा गांधी के दार्शनिक विचार	
4	रवीन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचार	
5	महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार	
6	रवीन्द्रनाथ टैगोर दर्शैक्षिक विचार	
7	महात्मा गांधी के शैक्षिक उद्देश्य	
8	रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक उद्देश्य	
9	महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम	
10	रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम	
11	महात्मा गांधी के अनुसार अनुशासन	
12	रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अनुशासन	
13	महात्मा गांधी के अनुसार अध्यापक	
14	रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अध्यापक	
15	महात्मा गांधी व रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारो की तुलना।	

CREATIVE

Teacher's Signature ______

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ______ DATE ______

अभिस्वीकृति

मैं अपने अध्यापक को धन्यवाद करना चाहूंगी जिन्होंने मुझे इस विषय पर परियोजना बनाने का अवसर प्रदान किया।

मैं अपने सहपाठियों, गुरुजनों एवं माता-पिता को भी धन्यवाद करूंगी जिन्होंने मुझे सीमित समय सीमा के भीतर इस परियोजना को अंतिम रूप देने में मेरी मदद की है।

CREATIVE Teacher's Signature ______

TOPIC ______ DATE ______

महात्मा गाँधी

जीवन परिचय -

मोहनदास करमचन्द्र गाँधी का जन्म कठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर सन् 1869 ई॰ को एक समृद्ध परिवार मे हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी एंव माता का नाम पुतलीबाई था। इनके पिता करमचन्द गाँधी पोरबन्दर राज्य के दीवान थे। 13 वर्ष की आयु मे गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा गाँधी के साथ हो गया। सन् 1885 मे इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। 4 सितम्बर 1887 ई॰ को जलयान द्वारा कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेज दिए गए जहाँ गाँधी जी ने वकालत की परीक्षा पास की और बैरिस्टर बनकर भारत लौट आए। अप्रैल सन् 1893 ई॰ को एक मुकदमे के सिलसिले मे दक्षिण अफ्रीका गए। यहाँ भारतीयो की दीन-हीन दशा की अनुभूति की और वे स्वयं इन अत्याचारो के शिकार हुए। लगातार संघर्ष के परिणामस्वरूप विवश होकर 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। 30 जनवरी 1948 ई॰ को नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर इनकी हत्या कर दी।

TOPIC ____________ DATE ____________

रविन्द्रनाथ टैगोर

जीवन परिचय - गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कलकत्ता के एक सुसंस्कृत, समृद्ध एवं प्रतिष्ठित टैगोर परिवार मे 6 मई, सन् 1861 को हुआ था। इनके पिता श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर समाजसुधार राष्ट्रभक्त एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। बालक टैगोर पर इनका अत्याधिक प्रभाव पडा। टैगोर ने नियमित शिक्षा प्राप्त नही की अर्थात् बंधमुक्त स्कूली शिक्षा प्राप्त करने से मुक्त रहे। घर की शिक्षा जब उन्हे स्वीकार नही लगी तो उन्हे पास की ओरियण्टल सेकेण्डरी स्कूल मे भर्ती करा दिया गया। इस विद्यालय मे शिक्षको का व्यवहार बडा कठोर और तानाशाही था। यहाँ पर इतने कटु अनुभव प्राप्त करते हुए कि उस समय उन्होने शिक्षा सुधार करने का संकल्प लिया और आगे चलकर शांति निकेतन की स्थापना की।

महात्मा गाँधी ने टैगोर को गुरूदेव की उपाधि प्रदान की। सन् 1941 मे इस महान दार्शनिक साहित्यकार का नश्वर शरीर पंचतत्व मे विलिन हो गया।

CREATIVE

Teacher's Signature ____________

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ____ DATE ____

महात्मा गाँधी के दार्शनिक विचार

गाँधी जी ने कभी दार्शनिक होने का दावा नही किया है। उन्होनें स्वंय लिखा है, "मैं इस बात का दावा नही करता हूं कि मैंने किसी नये सिद्धान्त को जन्म दिया है। गाँधी जी के दार्शनिक विचार निम्न हैं –

सत्य – गाँधी जी सत्य को जीवन के अंश के रूप मे स्वीकार करते है। सत्य ही ईश्वर है। सत्य ही जीवन का महत्वपूर्ण ढंग है।

अहिंसा – गाँधी जी सत्य को जीवन का लक्ष्य मानते है और अहिंसा को उसको प्राप्त करने का साधन।

कर्मवादी भावना – गाँधी जी गीता के कर्मवादी भावना से प्रभावित थे। वह कर्म मे विश्वास करते है, फल मे नहीं।

पुर्नजन्म मे विश्वास – गाँधी जी पुर्नजन्म मे भी विश्वास करते थे।

मोक्ष – गाँधी जी जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति को मानते थे।

wave CREATIVE

Teacher's Signature ____

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ____________________ DATE ____________

रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचार

टैगोर जी पहले कवि और बाद मे दार्शनिक थे। यदि इनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन को देखा जाए तो वह एक आध्यात्मिक नेता थे। उनके दार्शनिक विचार निम्नलिखित है -

) ब्रह्म के प्रति टैगोर के विचार - ईश्वर अथवा ब्रह्म के बारे मे हमे तर्क नही करना चाहिए बल्कि उसे प्रेम व अनुभूति से जानने का प्रयास करना चाहिए।

) आत्मा एवं जीव - अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीतांजली' मे इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। इनकी मान्यता है कि आत्मा स्वतन्त्र है और जीवन पराश्रित है

) जगत और प्रकृति - टैगोर ने कहा कि मनुष्य भी अपना संतुलन खो देते है यदि वह सर्वव्यापी प्रकृति की गोद छोडकर केवल मानवता के रास्ते पर चले।

) प्रेम की साधना - गीतांजलि मे टैगोर जी ने लिखा है कि भक्ति की आधारशीला प्रेम है या प्रेम और भक्ति को एक माना है।

CREATIVE Teacher's Signature ____________

TOPIC ______ DATE ______

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार

गांधी जी ने शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने स्वंय लिखा है कि सच्ची शिक्षा वही है जिसे पाकर अपने शरीर, मन, और आत्मा के उत्तम गुणो का सर्वांगीण विकास कर प्रकाश मे ला सके। साक्षरता न शिक्षा का आदि है और न अन्त। वह तो स्त्री पुरुषो को शिक्षित बनाने के अनेक साधनो मे एक साधन है। अपने आप मे साक्षरता कोई शिक्षा नही है। उन्होंने लिखा है शिक्षा वह है जो बालको की आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओ को उनके अन्दर से बाहर प्रेरित और प्रकट करती है।

मेरी समझ मे उस व्यक्ति को सच्ची शिक्षा मिलती है जिसका शरीर इतना सधा हुआ है कि उसके काबू मे रह सके और आराम तथा आसानी के साथ उसका बताया हुआ काम करे, जिसकी बुद्धि शुद्ध है, शान्त और न्यायदर्शी है और इन्द्रियाँ अपने वश मे है और जो नीच आचरण को धिक्करता है तथा दूसरो को अपने जैसे समझता है। ऐसा आदमी उदार शिक्षा प्राप्त माना जायेगा जो प्रकृति के नियमो पर चलता है, प्रकृति के नियम को सर्वोत्तम प्रयोग करता है।

CREATIVE

Teacher's Signature ______

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC DATE

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार

टैगोर जी शिक्षा का अर्थ वैयक्तिक और सामाजिक दोनो ही प्रकार की उन्नति मानते है। वह शिक्षा के माध्यम से मानव का शारिरिक, भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सभी प्रकार का विकास चाहते है। टैगोर जी हमारे सामने एक प्रकृतिवाद एवं आदर्शवाद के रूप मे आते है। वह प्रकृति के घनिष्ठ सम्बन्ध मे ही शिक्षा सम्भव मानते है उसके अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए और उसमे देश के भूत, भविष्य की जानकारी होनी चाहिए।

उन्होने लिखा है, "उच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन के सभी अस्तित्वो के साथ सामजस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाती है।"

"यह मेरा दृढ मत है कि स्वतन्त्रता के माध्यम से ही मानव जीवन मे पूर्णता आ सकती है।" स्वतन्त्रता जीवन की पूर्ति और विशेषता है और यही शिक्षा के लिए सत्य है। उनके अनुसार वास्तविकता से परे शिक्षा व्यर्थ है। वास्तविक परिस्थितियो मे प्राप्त ज्ञान को आत्मसात् कर उनका प्रयोग एवं उपयोग ही सच्ची शिक्षा है।

ATIVE Teacher's Signature

TOPIC DATE

महात्मा गाँधी के शिक्षा का उद्देश्य

बालक का सर्वांगीण विकास – गाँधी जी का विश्वास है कि जब तक मस्तिष्क और शरीर का विकास आत्मा की जागृति के साथ-साथ न होगा। पूर्ण मनुष्य निर्माण करने के लिए तीनो का उचित सामिश्रण आवश्यक है।

जीविकोपार्जन – गाँधी जी ने लिखा है, "उसकी (शिक्षा की) उपयोगिता की तो मेरी कसौटी यह होगी कि मैं स्वालम्बी बना दूं। सात साल के अन्त मे बालको को इस काबिल हो जाना चाहिये कि वे अपनी पढायी का खर्च अदा कर सके।

) चरित्र निर्माण – गाँधी जी उत्तम चरित्र का निर्माण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य मानते थे।
"विद्यार्थियो को आत्मनिरिक्षण करना चाहिए और अपने व्यक्तिगत चरित्र की देखभाल करनी चाहिए। समस्त ज्ञान का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए।

CREATIVE Teacher's Signature

TOPIC DATE

टैगोर जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1) शारिरिक विकास - टैगोर ने शारिरिक विकास को सर्वप्रमुख माना है कि औपचारिक शिक्षा न भी हो परन्तु इन्होंने व्यक्ति के शारिरिक विकास पर बल दिया है। टैगोर बालक का शारिरिक विकास प्रकृति मे ही सम्भव मानते है जैसे पेडो पर चढना तलाबो मे तैरना आदि।

मानासिक एवं बौद्धिक विकास - टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक की तर्क शक्ति का विकास करना है। तर्क शक्ति के विकास से मानव का मानासिक विकास होता है।

नैतिक विकास - टैगोर जी नैतिकता के विषय मे लिखते है, "हमे पाश्चिम से विज्ञान अपनाना है परन्तु यह हमारे लिए बडा अपमानजनक है यदि हम अपनी नैतिकता, आदर्श, व गुणो को भूल जाये तो बहुत ही अधिक मूल्यवान है।

सामाजिक विकास - जो बुद्धिमान है वह आत्मसन्तोष की इच्छाओ के साथ सामाजिक हित की इच्छाओ की संगति का प्रयास करता है।

CREATIVE Teacher's Signature

Scanned with OKEN Scanner

wave

TOPIC ____ DATE ____

महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

गाँधी जी ऐसे पाठ्यक्रम के पक्ष मे थे जो बालको को मात्र पुस्तकीय ज्ञान ही न दे, बल्कि उनका सर्वांगीण विकास करे। छात्रो को आत्मनिर्भर बना सके इसलिए वे पाठ्यक्र मे हस्त-कौशल को प्रधान स्थान प्रदान करते है।

1) हस्त कौशल - कृषि, बागवानी, लकडी का कार्य, आदि।
2) भाषाएँ - मातृभाषा
3) सामाजिक विज्ञान - इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र
4) गणित - अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित आदि।
5) कला एवं शारिरिक शिक्षा - चित्रकला, संगीत, खेलकूद, व्याय

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

अपने शैक्षिक सिद्धान्तो, शिक्षा के अर्थ एवं उद्देश्य के अनुसार टैगोर जी के पाठ्यक्रम के विषय मे भी समन्यवादी दृष्टिकोण है टैगोर जी प्रकृति, पुरूष एवं पदार्थ इन तीनो साधनो मे भी समन्वय चाहते थे। टैगोर जी ने शिक्षा को निम्न स्तरो पर बाँटा है।

1) प्रारम्भिक शिक्षा 2) माध्यमिक शिक्षा 3) उच्च तथा प्रौढ़ शिक्षा

उन्होंने इन स्तरो के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किए है। जिनकी शिक्षा क्रमश: शांति निकेतन, शिक्षा भवन तथा विश्व भारती मे दी जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC DATE

महात्मा गाँधी के अनुसार अनुशासन

गाँधी जी समस्त प्रगतिशील शिक्षाशास्त्रियो की तरह 'अनुशासन' का सम्बन्ध स्वतन्त्रता मे जोडते है। उन्होने आगे लिखा है, "सर्वोच्च ढंग की स्वतन्त्रता के साथ अधिकाधिक अनुशासन और नम्रता लगी हुई है स्वतन्त्रता के साथ नियम पालन पर जोर देते है "बिना नियम पालन के या अनुशासन के तो स्कूल चल नही सकता।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अनुशासन

टैगोर जी के अनुसार, "वास्तविक अनुशासन का अर्थ है, परिपक्व एवं स्वाभाविक आवेगो की अनुचित उत्तेजना और अनुचित दिशाओ मे विकास से सुरक्षा।

उन्होने स्वाभाविक अनुशासन मे विश्वास व्यक्त किया है। इसके लिए प्रेम, सहानुभूति, सद्भावना, प्रेरणा को आवश्यक बतलाया है। आत्मानुशासन के लिए उन्होने 'ध्यान करने' का अभ्यास माना है।

wave
TIVE
Scanned with OKEN Scanner

TOPIC DATE

महात्मा गाँधी के अनुसार अध्यापक

गाँधी जी अध्यापक के जीवन को एक असाधारण व श्रेष्ठ जीवन मानते है। उनके अनुसार अध्यापक का आचरण समाज के लिए आदर्श होना चाहिए। "शिक्षकों को अपना काम इस तरह सम्पादित करना चाहिए जिसमे अनुकूल भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण उत्पन्न हो जाये। शिक्षक का सर्वोन्मुख कार्य वह शिक्षणोपयोगी एवं प्रेरणादायक वातावरण की तैयारी मानते है जिससे प्रेरित होकर छात्र क्रियाशील हो सके।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अध्यापक

शिक्षा मे अध्यापक के स्थान को टैगोर जी महत्वपूर्ण मानते है। उन्हे ऐसे अध्यापक प्रिय थे जिनकी दृष्टि सदैव सूक्ष्म रहती हो और जिनकी जिज्ञासा विश्वव्यापत हो तथा ज्ञान प्राप्ति मे आनन्द आता हो।'

उनके अनुसार अध्यापक को आत्मसयमी, विनम्र, त्यागी, गम्भीर, उदार, स्वालम्बी, ज्ञानी तथा अदभुत आत्मा वाला तथा 'सादा जीवन उच्च विचार' का अध्ययन का अभ्यस्त होना चाहिए।

wave
Scanned with OKEN Scanner

DATE

TOPIC

रवीन्द्रनाथ टैगोर व महात्मा गाँधी के विचारो की तुलना

टैगोर का मानना था कि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे आगे बढने के लिए अंग्रेजो के ज्ञान को समझना और आधुनिक उद्योगो को स्थापित करना बहुत जरूरी था। टैगोर मानते थे कि जातिप्रथा भारत की सामाजिक कुरीति जरूर थी पर इसका इलाज आधुनिकीकरण के बगैर सम्भव नही है।

गाँधी जी का कहना था कि भारत को आगे बढाना है तो यह गाँव, किसान और गाय के सहारे ही यह सम्भव हो सकता है। गाँधी जी की विचारधारा जितनी राष्ट्रवादी थी, टैगोर उतने ही अर्न्तराष्ट्रवाद के समर्थक थे। दोनो मनुष्य मात्र मे विश्वास रखते थे अथवा मानव प्रेमी थे।

Teacher's Signature